

यशुममि मन अभिलाष बढ़ावे ।

किंकण शब्द चलन धुनि रुनि झुनि

ठुमकि ठुमकि ग्रह आवै ॥१॥

धूसर धूर अंग संग लीन्हे

ग्वाल बाल हरषावै ॥२॥

ले लकुटी आवै मम आंगन

मो चरननि सिर नावै ॥३॥

देऊं आशीष लै गोदी में

मुख चूमि दूध पिलावै ॥४॥

गिर गिर पड़त रोय गोदी से

दाऊ मोहि खिजावै ॥५॥

कनक खम्भ प्रतिबिंब आपनौ

कब नवनीत खिलावै ॥६॥

बांह उठाइ दौड़ दौड़ कर

धोरी धैनु बुलावै ॥७॥

कब बैठाय मोहि झूला में

मधुर मधुर स्वर गावै ॥८॥

करत कलेऊ कृष्ण लाइले

मो मुख कौर खिलावै ॥९॥

मीठी मीठी बाते कहि कहि

कब मो जीउ जुड़ावै ॥१०॥

माखन मांगत अड़ बड़ाय करि

मटुकी फोड़ि गिरावै ॥११॥

मैया बेगहिं करो सगाई

कहि कहि उर लपटावै ॥१२॥

ऐसी दुल्हनि मैया मांगूं

छिप छिप मोहि खवावै ॥१३॥

कब मेरी चुनड़ी ले भागे

जोई जोई कहि बतरावै ॥१४॥

मैया कमली चोरि गई है

गोपिनि गारी गावै ॥१५॥

हरि मन्दिर में होय आरती

तब लै ताल बजावै ॥१६॥

करत स्नान नन्दराय जब

पादुका जाय छिपावै ॥१७॥

मैया मैं अब सन्त भयो हूं

माला तिलक लगावै ॥१८॥

श्रीराधा को नाम मनोहर

सरिका शुकहिं पढ़ावै ॥१९॥

जब सोऊं तब नन्हें करनि सों

पग मेरे चापि दिखावै ॥२०॥

ले दोहनी जाइ खड़क में

कजरी धैनु दुहावै ॥२१॥

मैया तेरो सेवकु होइ हैं

कहि कहि मोहि रिझावै ॥२२॥

देखि प्रात छबि चन्द्र वदन की

कब मो नयन सिरावै ॥२३॥

ले बरात चलै महा रानौ

मंगल मोद बढ़ावै ॥२४॥

को मो सम बड़ भाग जगत में

नव दुल्हनि घर आवै ॥२५॥

मिलकर सगल बृज की गोपी

मंगल वाधाई गावै ॥२६॥

श्रीकृष्ण प्रिया हंसि सासु कहैगी

मो मन साध पुरावै ॥२७॥

शील स्नेह भरी सुकुमारी

आनन्द सिन्धु अन्हवावै ॥२८॥

अति अनुराग मगन श्री यशुमति

निशदिन जानि न पावै ॥२९॥

पनहरी उर प्रीति विमल हो

सूरदास जस गावै ॥३०॥